स्वतंत्रता दिवस '2000 के राष्ट्रीय पर्व पर
संस्थान के निदेशक डा० सौभाग्य मल सेठ के सम्बोधन के अंश

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान के मेरे साथियों, परिवारों के सदस्यगण, प्यारे बच्चों, ।

नयी सहस्त्राब्दी के पहले एवं 54 वें स्वतंत्रता दिवस एवं राखी के पावन पर्व पर मैं आप सबका हार्दिक अभिनंदन करता हूँ । आज से 53 वर्ष पूर्व हम आजाद हुए थे । गुलामी के वर्षो में हम विदेशी शक्तियों की इच्छा पर निर्भर थे, पराधीन थे । हमारे महान नेताओं, क्राँतिकारियों, देश के लाखों परिवारों, महिलाओं व बच्चों के बलिदान व अथक प्रयासों से ही 15 अगस्त 1947 के पावन राष्ट्रीय दिवस पर हमें स्वतंत्रता मिली थी । आज जब हम इस अवसर पर एकत्रित हुए हैं, आइये कुछ लेखा-जोखा करें कि हमने क्या पाया है, क्या खोया है ? हम क्या थे,क्या हो गये हैं और क्या होने वाले हैं ?

पँचवर्षीय योजनाओं के कार्यान्वयन से हमने आर्थिक क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति प्राप्त की है । अनेकों बहुउद्देशीय जल संसाधनों की योजनायें बनी हैं, अनेकों इस्पात के कारखानें,खाद के कारखानें बनें हैं । हम परमाणु बम से लेकर वायुयान तक, पनडुब्बी से लेकर रॉकेट तक, और सैटैलाइट से लेकर डीज़ल इंजन तक सभी आधुनिक प्रणालियों को बनाने में सक्षम हैं । हमारा रेल नेटवर्क दुनिया का सबसे बड़ा नेटवर्क है । अनाज के उत्पादन में हम आत्मनिर्भर है । पावर-विद्युत उत्पादन के लिये परमाणु बिजलीघर, जलविद्युत एवं ताप विद्युत परियोजनायें सफलता पूर्वक चल रही हैं । सड़कों, टेलीफोन, टेलीविज़न, कार, कम्प्यूटर - सभी क्षेत्रों में सराहनीय प्रगति हुई है । शिक्षा के क्षेत्र विशेषकर विज्ञान की शिक्षा के विस्तार का फल अब हमको मिलने लगा है । आज भारत साफ्टवेयर क्षेत्र में विश्व का सबसे अग्रणी राष्ट्र बन गया है । अमेरिका से लेकर जर्मनी तक, आस्ट्रेलिया लेकर जापान तक, ब्रिटेन से लेकर रूस तक सभी भारतीय साफ्टवेयर इंजीनियरों को अपने यहाँ बुला रहे हैं । ये सब उपलब्धियाँ आजादी के फलस्वरूप ही हमें मिली हैं ।

राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्रों में भी हमने महत्वपूर्ण पड़ाव तय किये हैं । हम एक सार्वभौम सम्पूर्ण प्रभुत्व संपन्न गणतन्त्र हैं सभी नागरिकों के समान अधिकार हैं । प्रजातंत्र अब लाखों गाँव में पंचायत राज के रूप में पहुँच गया है । जमींदारी व ऊँचनीच के भेदभाव समाप्त हो गये हैं । लाखों शरणार्थियों का पुनर्वास सफलता पूर्वक किया गया है । Non -aligementwork की पॉलिसी के हम प्रणेता है और विश्व की उभरती शक्तियों में हमारा स्थान बहुत ऊँचा है । सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिये भारत का नाम लिया जा रहा है । यह सब आजाद भारत का एवं प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली का ही फल है ।

हमारे किसानों एवं हमारे सैनिकों ने आज भारत को अनेकों सफलतायें दिलायी हैं । पिछले 53 वर्षों में हमने पाकिस्तान एवं चीन के साथ लड़ाईयाँ लड़ी हैं । हाल ही की कारगिल की लड़ाई में सफलता एवं UN Peace Keeping Force में भारतीय सैनिकों की भूमिका को सबने सराहा है । आइये आज हम उन सब वीर सैनिकों के नमन करें जिन्होंने हँसते-हँसते हमारी आजादी

की रक्षा के लिये अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया । हम अपने कर्मठ किसानों व कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के भी नमन करें । उन सबकी मेहनत का ही फल् है कि आज हमारी 100 करोंड़ जनता अन्न एवं बनुनियादी जरूरतों के मामले में करीब-करीब आत्मनिर्भर है । आजाद भारत में महिलाओं ने भी सराहनीय प्रगति की है । सेना में भी आज महिलायें पुरूषों के साथ कँधे से कँधा मिलाकर राष्ट्र-रक्षा में जुटी हुई हैं । हमारे अस्पताल एवं डॉक्टर आज भारतीयों का ही नहीं बल्कि विदेशियों का भी इलाज करते हैं । टूरिस्ट भी ज्यादा संख्या में आ रहें हैं । टेलीफोन प्रणाली, इन्टरनेट एवं कम्प्यूटर का तेजी से विस्तार हो रहा है ।

पर क्या सब कुछ अच्छा ही अच्छा है ? क्या हम सही दिशा में जा रहे हैं ? हमारी तेजी से बढ़ती जनसंख्या, जैसे हमारे सीमित संसाधनों को निगलती जा रही है । जल, भूमि, खनिज, सभी कुछ सीमित है । जनसंख्या जो आज 100 करोड़ है और 2050 तक 150 से 170 करोड़ हो जायेगी । क्या हम सबके लिये खाद्यान्न, पीने का पानी, रहने का घर, शिक्षा, स्वास्थ्य के संसाधन जुटा पायेंगे । शहरी जनसंख्या की बढ़ोतरी एवं औद्योगीकरण के फल्स्वरूप बढ़ने वाले जल एवं वायु के प्रदूषण का मुकाबला कर पायेंगे । हमारे सांस्कृतिक मूल्यों का जो ह्रास हो रहा है क्या उसे हम रोक पायेंगे । आज हम अपने स्वार्थ में अन्धे होकर भारत माता का रक्त तक चूसने में प्रवृत्त हो । अलगाववाद, भाषावाद, धर्मान्धता, चोरी, डकैती, कत्ल, गुमशुदा की खबरों से भरे हमारे अख़बार कुछ और ही कहानी कह रहे हैं । जगह-जगह बम विस्फोट, दुर्घटनायें, सरकारी सम्पत्ति पर हमले, हड़ताल, बन्द, AIDS का संक्रमण, जल का प्रदूषण, रिश्वतखोरी, जातिवाद, राजनीति, सभी यह दिखा रहे हैं कि 53 वर्ष का भारत शायद बुढ़ा हो रहा है बुरी तरह अनेकों रोगों से संक्रमित हो रहा है ।

आज के पावन राष्ट्रीय पर्व पर हमारा यह कर्तव्य है कि हम सब मिलकर यह प्रतिज्ञा करें कि हम मन, वचन, कर्म, से अपनी पूरी शक्ति से अपने प्यारे भारत को इन सभी बीमारियों से मुक्त करवायेंगे, जिससे हमारी आने वाली सन्तानें गर्व से यह कह सकें कि उनके पूर्वजों ने इस महान राष्ट्र को एक धरोहर के रूप में संजोये रखा एवं पीढ़ी दर पीढ़ी हमारा राष्ट्र विश्व के एक महान अग्रणी राष्ट्र के रूप में अपना स्थान बनाये रखे जैसा कि अतीत में था ।

आज का यह राष्ट्रीय दिवस, मेरे लिये राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के निदेशक के रूप में आप सबको संबोधित करने का अंतिम स्वतंत्रता दिवस है । मेरा Term 31 जनवरी 2001 को समाप्त हो रहा है । मैं 1 अगस्त 1974 को रूड़की आया था और आज 26 वर्ष से ज्यादा समय यहाँ रहते हुए हो गया है । मैं इस इवसर पर परमपिता परमेश्वर से यहीं प्रार्थना करता हूँ कि हमारा राष्ट्र एवं हमारा संस्थान दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करें । आप सब एवं आपके परिवार के सदस्य सुख-शान्ति एवं प्रगति प्राप्त करें ।

जयहिन्द !